ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
PP. NO.- 358-361
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

मथुरा मूर्तिकलाः धार्मिक और मानवीय विषयों पर केंद्रित प्राचीन कला शैली

डॉ0 रश्मि शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, विभाग प्रभारी चित्रकला विभाग, किशोरी रमण महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा

Received-25.10.2024, Revised-01.11.2024, Accepted-07.11.2024 E-mail : draksrivastava100@gmail.com

सारांश –मथुरा मूर्तिकला एक महत्वपूर्ण भारतीय कला शैली है जो धार्मिक और मानवीय विषयों पर केंद्रित है। यह कला शैली भारतीय कला के विकास में महत्वपूर्ण है, खासकर कुषाण काल में। यह बौद्ध, हिंदू और जैन धर्मों से प्रभावित थी, और मथुरा में ही विकसित हुई थी।

मथुरा कला शैली का प्रारंभ, ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी के अंत में कुषाण काल में माना जाता है। कनिष्क, हुविष्क और वासुदेव के शासन काल में मथुरा कला का सबसे ज्यादा विकास हुआ। इस शैली में उन उत्कृष्ट कलाकृतियों का निर्माण हुआ जिनकी ख्याति चीन तक पहुँची।

मथुरा की कला शैली भारतीय कला के एक विशेष स्कूल को संदर्भित करती है , जो लगभग पूरी तरह से मूर्तिकला के रूप में जीवित है। यह कला दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से शुरू होती है, जो मध्य उत्तर भारत में मथुरा शहर पर केंद्रित थी। वह एक ऐसा समय था जब भारत में बौद्ध धर्म और जैन धर्म का साथ–साथ विकास हुआ। मथुरा इन धर्मों के लिए भक्ति चिह्नों का निर्माण करने वाला, पहला कलात्मक केंद्र था। कम से कम गुप्त काल तक यह भारत में धार्मिक कलात्मक अभिव्यक्ति का प्रमुख केंद्र था और पूरे उपमहाद्वीप में प्रसिद्ध था। प्रस्तुत शोध लेख में मथुरा कला शैली का विश्लेषण किया गया है ।

कुंजीभूत शब्द–

प्रस्तावना– कालानुक्रमिक रूप से, मौर्य साम्राज्य (322 और 185 ईसा पूर्व) की कला, विकसित होकर मौर्य कला के बाद माथुरन मूर्तिकला के नाम से पहचानी गयी है। ऐसा कहा जाता है कि यह पिछली मौर्य शैली के साथ पैमाने, सामग्री या शैली में एक ष्तीव्र विरामष् का प्रतिनिधित्व करती है। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से मथुरा, भारत का सबसे महत्वपूर्ण कलाकृति उत्पादन केंद्र बन गया था। इसकी प्रमुख पहचान, लाल बलुआ पत्थर से बनी मूर्तियों की पूरे भारत में प्रशंसा की गई और उनका निर्यात किया गया। यह मथुरा ही था जहाँ पवित्र कला कृतियों को कई शरीर के अंग (विशेष रूप से सिर और हाथ) देने की विशिष्ट भारतीय परंपरा, पहली बार चौथी शताब्दी ईस्वी के आसपास आम हो गई थी।

'कटरा स्टेल'। अभय मुद्रा में बैठे बोधिसत्व शाक्यमुनि, शिलालेख के साथ ष्अमोह–असी (...) ने इस बोधिसत्व को स्थापित किया ष्। उत्तरी क्षत्रप, पहली शताब्दी ई.पू. का अंत। यह तथाकथित कपार्डिन मूर्तियों में सबसे बेहतरीन और सबसे अच्छी तरह से संरक्षित है।

मथुरा कला शैली की तुलना अक्सर गांधार की ग्रीको–बौद्ध कला से की जाती है , जो पहली शताब्दी ई.पू. से विकसित हुई थी। इसमें विशेष रूप से, बुद्ध की छवि की उत्पत्ति और कला के प्रत्येक स्कूल द्वारा निभाई गई भूमिका उल्लेखनीय है। बुद्ध की एक छवि के निर्माण से पहले, संभवतः पहली शताब्दी ई.पू. के आसपास, भारतीय बौद्ध कला, जैसा कि भरहुत या सांची में देखा गया था, अनिवार्य रूप से अनिकोनिक थी। यह बुद्ध के प्रतिनिधित्व से बचते हुए उनके प्रतीकों पर निर्भर करती थी। जैसे कि धम्म चक्र या बोधि वृक्ष।

मथुरा चौथी से छठी शताब्दी तक, या उससे भी आगे तक, मूर्तिकला के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बना रहा । इस समय की ज़्यादातर मूर्तियाँ बौद्ध और जैन प्रतिमाओं की थीं।

मथुरा कला शैली में विभिन्न संस्कृतियों का समन्वय हुआ था। भारतीय, यूनानी तथा ईरानी, तीनो विचार धाराएँ ऐतिहासिक क्रम से मथुरा में एक दूसरे से टकराई थीं।

इनके मिलाप से मथुरा कला शैली विकसित हुई। इसमें भारतीय कला की धार्मिकता, ईरानी कला का ब्राह्य सौंदर्य तथा यूनानी मानवीय शरीर का समानुपातिक आकर्षण, तीनो एकत्र हो गए थे। मथुरा कला शैली को ही प्रथम जैन मूर्तियाँ गढ़ने का श्रेय प्राप्त है। मथुरा से प्राप्त होने वाले लगभग पांच हजार कला एवं शिल्प के उदाहरण मिलते हैं।

मथुरा कला के वर्ण्य विषय और तकनीक, परिष्कृत रूप कला के क्षेत्र में दीर्घकालिक अभ्यास की ओर संकेत करता है। मथुरा की कुषाण कालीन कला भरहुत व् साँची की कला से प्रेरित है । उसने अपनी मौलिक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

सूझ–बूझ एवं रचनात्मक प्रतिभा का उपयोग करते हुए वहां कला के प्रतीकों, अभिप्रायों एवं प्रतिभाओं को नवीन रूप प्रदान किया। कला के क्षेत्र में मथुरा के कलाकारों ने पुरातन कठोरता एवं रुढ़िवादी परम्परा का परित्याग कर दिया था। उन्होंने पूर्वाग्रहों को तिलांजलि देकर स्वतंत्र मन से कला साधना की। मथुरा की मूर्तियों के लिए 'ताल बहुएं' पत्थर का प्रयोग किया गया है । मथुरा की मूर्तियाँ अत्यन्त सुन्दर व् कलात्मक तरीके से गढ़ी गयी हैं, जो सौंदर्य की दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

इस मूर्तियों के पीछे पालिश की गयी है और पीछे की तरफ भी जिस धर्म से सम्बंधित मूर्तियाँ बनी है, वैसी ही छोटी–छोटी आकृतियाँ बनायी गयी हैं, जैसे बुद्ध की मूर्तियों के पीछे बोधिसत्व, हल्के रूप में बुद्ध का ही अंकन कर दिया है। ये मूर्तियाँ पत्थर को तराशकर इस प्रकार बनायी गयी थीं कि उनमें सजीवता व मौलिकता दिखाई पड़ती है।

मथुरा कला शैली में बुद्ध, जैन एवं हिन्दू मूर्ति शिल्प

यक्षिणी– मथुरा चित्रकला

मथुरा शैली की प्रारंभिक मूर्तियों में बुद्ध और बोधिसत्वों की गढ़ी हुई प्रसन्न आकृतियाँ हैं, जिनमें आध्यात्मिकता का आभास नहीं था। परंतु उत्तर काल में, उनमें सौन्दर्य और धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति का विकास हुआ। यद्यपि मथुरा शैली प्रारंभिक भारतीय परम्परा की बहुत ऋणी है, तथापि उसने उत्तर – पश्चिम का भी अनुकरण किया और एक से अधिक यूनानी–रोमन चेष्टाओं को भी ग्रहण किया।

मथुरा के मूर्तिकारों ने अपनी बौद्ध मूर्तियों के लिए एक ओर तो प्रारंभिक शताब्दियों की हष्ट–पुष्ट यक्ष की मूर्तियों से और दूसरी ओर ध्यान मुद्रा में जैन तीर्थकरों से प्रेरणा प्राप्त की।

मथुरा से बुद्ध एवं बोधिसत्वों की खड़ी तथा बैठी मुद्रा में बनी हुई मूर्तियाँ मिलती हैं। उनके व्यक्तित्व में चक्रवर्ती तथा योगी दोनों का ही आदर्श देखने को मिलता है। बुद्ध मूर्तियों में कटरा से प्राप्त मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिसे चौकी पर उत्कीर्ण लेख में बोधिसत्व की संज्ञा दी गई है। इसमें बुद्ध को भिक्षु वेष धारण किये हुए दिखाया गया है।

वे बोधिवृक्ष के नीचे सिंहासन पर विराजमान हैं तथा उनका दायाँ हाथ अभय मुद्रा में ऊपर उठा हुआ है। उनकी हथेली और तलवों पर धर्मचक्र तथा त्रिरत्न के चिन्ह बनाये गये हैं। मूर्ति के पीछे वृत्ताकार प्रभामण्डल दिखाया गया है। समग्रतः यह मूर्ति कलात्मक रूप से अत्यंत प्रसंशनीय है।

बुद्ध मूर्तियों के अतिरिक्त मैत्रेय, कश्यप, अवलोकितेश्वर आदि बोधिसत्वों की मूर्तियाँ भी मथुरा में मिलती हैं। मैत्रेय को अभय मुद्रा में अथवा दाये हाथ में कमल नाल लिए हुए तथा बायें हाथ में अमृत घट लिए हुए दिखाया गया है। बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथायें भी स्तभों पर मिलती हैं।

जन्म, अभिषेक, महाभिनिष्क्रमण, सम्बोधि, धर्मचक्र प्रवर्त्तन, महापरिनिर्वाण जैसी जीवन की विविध घटनाओं का कुशलतापूर्वक अंकन किया गया है। मथुरा के कलाकारों ने ईरानी तथा यूनानी कला के कुछ प्रतीकों को भी ग्रहण कर उन पर भारतीयता का रंग चढ़ा दिया। यही कारण है कि मथुरा की कुछ बुद्ध मूर्तियों में गांधार मूर्तियों के लक्षण दिखायी देते हैं, जैसे–कुछ मूर्तियों में मूँछ तथा चप्पल दिखायी गयी है।

मथुरा के शिल्पियों ने बुद्ध–बोधिसत्व मूर्तियों के अतिरिक्त हिन्दू एवं जैन मूर्तियों का भी निर्माण किया था। हिन्दू देवताओं में विष्णु, सूर्य, शिव, कुबेर, नाग, यक्ष की पाषाण प्रतिमायें अत्यंत सुन्दर एवं कलापूर्ण हैं। मथुरा तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्रें से अब तक चालीस से भी अधिक विष्णु मूर्तियाँ प्राप्त हो चुकी हैं। अधिकांश चतुर्भुजी हैं।

विष्णु के अवतारों से संबंधित मूर्तियाँ प्रायः नहीं मिलती। शिव प्रतिमायें लिंग तथा मानव दोनों रूपों में मिलती हैं। शिव लिंग कई प्रकार के हैं। जैसे– एक मुखी, दो मुखी, चार मुखी, पाँच मुखी आदि। शिव के साथ उनकी अर्धांगिनी पार्वती की प्रतिमा पहली बार संभवतः मथुरा में ही कृषाण कलाकारों द्वारा बनाई गयी थ।

मथुरा में इस समय पाशुपात सम्प्रदाय के अनुयायी बड़ी संख्या में निवास करते थे। मथुरा कला में सूर्य प्रतिमाओं का भी निर्माण किया गया। मानव रूप में सूर्य को लम्बी कोट, पतलून तथा बूट पहने हुए दो या चार घोड़ों के रथ पर सवार दिखाया गया है।

जैन मूर्तियाँ दो प्रकार की हैं – खड़ी मूर्तियाँ जो कायोत्सर्ग मुद्रा में हैं तथा बैठी हुई मूर्तियाँ जो पद्मासन में हैं। खड़ी मुद्रा (कायोत्सर्ग) की मूर्तिया पूर्णतया नग्न हैं, उनकी भुजाएं घुटनों के नीचे तक फैली हुई हैं तथा भौहों के बीच केशपुंज बनाया गया है।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

बैठी हुई (पदमासन) मूर्तियाँ ध्यान मुद्रा में हैं तथा इनकी दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर केन्द्रित है। इनके आसन के सामने बीच में धर्मचक्र तथा पार्श्वभाग में सिंह बनाए गए हैं। इसी प्रकार मथुरा और उसके आस–पास जैन तीर्थंकरों की पाषाण मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं जो कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

मथुरा शैली में शिल्पकारी के भी सुंदर नमूने मिलते हैं। बुद्ध एवं बोधिसत्व मूर्तियों के अतिरिक्त मथुरा से कनिष्क की सिररहित मूर्ति मिलती है जिस पर 'महाराज राजाधिराजा देवपुत्रे कनिष्को' अंकित है। यह खड़ी मुद्रा में है तथा 5 फुट 7 इंच ऊँची है।

राजा घुटने तक कोट पहने हुए है, उसके पैरों में भारी जूते हैं, दायाँ हाथ गदा पर टिका है तथा वह बायें हाथ में तलवार पकड़े हुए है। कला की दृष्टि से यह प्रतिमा उच्चकोटि की है, जिसमें मूर्तिकार को सम्राट् की पाषाण मूर्ति बनाने में अद्‌भुत सफलता मिलती है। शिल्प की दृष्टि से इसे सम्राट का यथार्थ रूपांकन कहा जा सकता है।

यह सत्य है कि मथुरा कला शैली में बनी कुछ मूर्तियों पर यूनानी प्रभाव परिलक्षित होता है। लेकिन अब यह स्पष्टतः सिद्ध हो चुका है कि मथुरा की बौद्ध मूर्तियाँ गांधार से सर्वथा स्वतंत्र थीं। तथा उनका आधार मूल रूप से भारतीय ही था।

वासुदेव शरण अग्रवाल के मतानुसार सर्वप्रथम मथुरा में ही बुद्ध मूर्तियों का निर्माण किया गया, जहाँ इनके लिए पर्याप्त धार्मिक आधार था। उनके अनुसार, मूर्ति की कल्पना धार्मिक भावना की तुष्टि के लिए ही होती है।

मथुरा कला की विशेषताएं

मथुरा कला शैली की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

इस कला शैली में बनी मूर्तियों का निर्माण सफेद चित्ती वाले लाल रवादार पत्थर से किया गया है।

स्त्री मूर्ति के नेत्रों में चंचलता की छाप दिखायी देती है। नेत्रों के कटाक्ष और बांकपन में भारतीयता स्पष्ट झलकती है।

मथुरा कला की बुद्ध मूर्ति सिंहासनासीन तथा खड़ी आकृति में निर्मित है। खड़ी मूर्तियों के पैरों के नीचे सिंह की आकृति पायी जाती है।

इस शैली में निर्मित मूर्तियों में कम–से–कम अलंकरण तथा वस्त्रों का प्रयोग मिलता है।

जैन मूर्तियों के वक्ष स्थल पर पवित्र मांगलिक चिन्ह 'श्री वत्स' अंकित मिलता है।

मथुरा कला शैली में आभूषणों से लदी स्त्रियाँ, जिनकी आकृतियाँ नितम्ब पर अत्यंत चौड़ी तथा कमर पर पतली हैं। चपल मुद्रा में खड़ी हुई सिन्धु सभ्यता की नर्तकी बाला का स्मरण कराती हैं।

वास्तव में मथुरा की कलाकृतियाँ वैदेशिक प्रभाव से मुक्त हैं, तथा इस कला शैली में भरहुत और साँची की प्राचीन भारतीय शैली को ही आगे बढ़ाया गया है। अपनी मौलिकता, सुन्दरता और रचनात्मक विविधता एवं कलात्मक सृजन के कारण मथुरा शैली का भारतीय कला में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

टेराकोटा मूर्तियाँ (चौथी–दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व)

हालाँकि मथुरा में मौर्य काल की कोई पत्थर की मूर्ति या वास्तुकला ज्ञात नहीं है। फिर भी उत्खनन में मौर्य स्तर से कुछ अपेक्षाकृत उच्च गुणवत्ता वाली टेराकोटा मूर्तियाँ बरामद की गई हैं। इससे पता चलता है कि मौर्य साम्राज्य के काल में मथुरा में कुछ स्तर की कलात्मक रचना हुई थी। ऐसा माना जाता है कि, टेराकोटा मूर्तियों का निर्माण पत्थर की मूर्तिकला की तुलना में बहुत आसान था। और इसलिए यह कलात्मक अभिव्यक्ति का मुख्यधारा का रूप बन गया। मथुरा में सबसे प्राचीन मूर्तियाँ चौथी–दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत की मिली थीं। और उनका उत्पादन, मन्नत के टैंकों और मंदिरों के संबंधित टेराकोटा लघुचित्रों के साथ, लगभग एक हजार वर्षों तक जारी रहा।

मथुरा से एक टेराकोटा मन्नत मूर्ति। चौड़े कूल्हे और शानदार फूलों की हेडड्रेस उर्वरता और प्रचुरता के प्रति समर्पण का सुझाव देती है। उसके सिर में कमल के डंठल हैं, और बच्चे उससे चिपके हुए हैं। ऊँचाईरू 25. 7 सेमी (10.1 ")। मथुरा, तीसरी–दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व।

टेराकोटा में आम तौर पर महिला देवताओं या मातृ देवियों के रूप में दिखाई देती हैं। दूसरी शताब्दी की महिलाओं को विस्तृत हेडड्रेस में दिखाया गया है। 'शतपथ ब्राह्मण' के प्राचीन वैदिक पाठ में

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

ऐसी मूर्तियों का वर्णन ष्चौड़े कूल्हों वाली, चिकने वक्षस्थल और पतली कमर वालीष् के रूप में किया गया है। और यह सुझाव दिया गया है कि वे पृथ्वी, विशेष रूप से पृथ्वी की देवियों पृथ्वी और अदिति के मानवीकरण हैं , जो ष्पूरी दुनिया की संवाहक और समर्थकष् और ष्सभी देवताओं का भण्डारष् हैं। , उनके हेडड्रेस को अक्सर कमल के डंठलों से सजाया जाता है, जिसमें शंक्वाकार कमल के स्त्रीकेसर होते हैं। जिनमें उनके बीज होते हैं, जो उर्वरता और सुंदरता का प्रतीक हैं। बाद के काल में भी कमल, महिला देवताओं की विशेषता बना रहा। कुछ टेराकोटा प्रतिमाओं में इन महिला देवियों का पंथ, जो छोटी और आसानी से निर्मित आकृतियों की विशेषता रखता था, अनिवार्य रूप से घरेलू प्रतीत होता है।

चौथी और तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व की टेराकोटा मूर्तियों में विदेशियों की कई आकृतियाँ भी दिखाई देती हैं। जिन्हें या तो केवल ष्विदेशीष् या उनकी विदेशी विशेषताओं के कारण फ़ारसी या ईरानी बताया गया है। ये मूर्तियाँ इस अवधि के दौरान भारतीयों के ईरानी लोगों के साथ बढ़ते संपर्कों को दर्शा सकती हैं । इनमें से कई विदेशी सैनिकों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो मौर्य काल के दौरान भारत आए थे। और अपनी विशिष्ट जातीय विशेषताओं और वर्दी से मथुरा में मॉडलरों को प्रभावित किया था। टेराकोटा की एक मूर्ति में, एक व्यक्ति को ष्फ़ारसी रईसष् उपनाम दिया गया है। और यह दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की है, जिसे कोट, स्कार्फ़, पतलून और पगड़ी पहने देखा जा सकता है।

निष्कर्ष–मथुरा में लगभग तीसरी शती ई०पू० से बारहवीं शती ई० तक, अर्थात डेढ़ हजार वर्षों तक शिल्पियों ने मथुरा कला की साधना की जिसके कारण भारतीय मूर्ति शिल्प के इतिहास में मथुरा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। कुषाण काल से मथुरा, मूर्ति कला क्षेत्र के उच्चतम शिखर पर था। सबसे विशिष्ट कार्य जो इस काल के दौरान किया गया, वह बुद्ध का सुनिश्चित मानक प्रतीक था। मथुरा के कलाकार गंधार कला में निर्मित बुद्ध के चित्रों से प्रभावित थे। जैन तीर्थंकरों और हिन्दू चित्रों का अभिलेख भी मथुरा में पाया जाता है। उनके प्रभावाशाली नमूने आज भी मथुरा, लखनऊ, वाराणसी, इलाहाबाद में विद्यमान हैं।

इतिहास पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट हो जाता है कि मधु नामक दैत्य ने जब मथुरा का निर्माण किया, तो निश्चय ही यह नगरी बहुत सुन्दर और भव्य रही होगी। शत्रुघ्न के आक्रमण के समय इसका विध्वंस भी बहुत हुआ और वाल्मीकि रामायण तथा रघुवंश, दोनों के प्रसंगों से इसकी पुष्टि होती है कि उसने नगर का नवीनीकरण किया। लगभग पहली सहस्राब्दी से पाँचवीं शती ई० पूर्व के बीच के मृत्पात्रों पर काली रेखाएँ बनी मिलती हैं जो ब्रज संस्कृति की प्रागैतिहासिक कलाप्रियता का आभास देती है। उसके बाद मृण्मूर्तियाँ हैं जिनका आकार तो साधारण लोक शैली का है परन्तु स्वतंत्र रूप से चिपका कर लगाये आभूषण सुरुचि के परिचायक हैं। मौर्यकालीन मृण्मूर्तियों का केशपाश अलंकृत और सुव्यवस्थित है। सलेटी रंग की मातृदेवियों की मिट्टी की प्राचीन मूर्तियों के लिए मथुरा की पुरातात्विक प्रसिद्ध है।

लगभग तीसरी शती के अन्त तक यक्ष और यक्षियों की प्रस्तर मूर्तियाँ उपलब्ध होने लगती हैं। मथुरा में लाल रंग के पत्थरों से बुद्ध और बोद्धिसत्व की सुन्दर मूर्तियाँ बनायी गयीं। महावीर की मूर्तियाँ भी बनीं। मथुरा कला में अनेक बेदिकास्तम्भ भी बनाये गये। यक्ष– यक्षिणियों और धन के देवता कुबेर की मूर्तियाँ भी मथुरा से मिली हैं। इसका उदाहरण मथुरा से कनिष्क की बिना सिर की एक खड़ी प्रतिमा है। मथुरा शैली की सबसे सुन्दर मूर्तियाँ पक्षियों की हैं, जो एक स्तूप की वेष्टणी पर खुदी खुई थी। इन मूर्तियों की कामुकतापूर्ण भावभंगिमा सिन्धु में उपलब्ध नर्तकी की प्रतिमा से बहुत कुछ मिलती जुलती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. युग–युगीन भारतीय कला – महेश चन्द्र जोशी
2. प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास – कृष्ण कुमार
3. प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता दृ शर्मा व सत्यप्रकाश
4. प्राचीन भारत का राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास – विश्वास
5. प्राचीन भारतीय कला व संस्कृति – डॉ० राज किशोर सिंह
6. प्राचीन भारत का राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास दृ विमल चन्द्र पाण्डेय
7. भारतीय संस्कृति दृ बाबू गुलाबराय
8. प्राचीन भारतीय कला व संस्कृति – सिंह व यादव
9. भारतीय कला – डा० शिवस्वरूप सहाय
10. प्राचीन भारत – गौतम एवं शर्मा
11. भारतीय कला – डॉ० ए०एल० श्रीवास्तव
12. प्राचीन भारत – डा० आर के० चतुर्वेदी
13. प्राचीन भारत – डॉ० राय चौधरी
14. प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म तथा दर्शन– डॉ० ईश्वरी प्रसाद
15. अद्भुत भारत – ए०एल० बाराम
16. प्राचीन भारत का इतिहास – झा कृष्ण मोहन श्रीमाली
17. भारतीय संस्कृति और विश्व संपर्क – डॉ० दामोदर सिंघल

*****